लोक साहित्य की प्रकीर्ण विधाएँ

प्रो० पवन अग्रवाल

हिन्दी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ
2020

‘प्रकीर्ण’ से तात्पर्य–

‘प्रकीर्ण’ का शब्द कोशीय अर्थ है- **फैलाया हुआ, बिखरा हुआ, मिलाया हुआ, मिश्रित, अस्त–व्यस्त किया हुआ, फुटकल।**

‘प्रकीर्ण’ लोक साहित्य से तात्पर्य–

वैसे तो लोकसाहित्य की समस्त विधाओं पर ‘बिखरी हुयी, मिश्रित, फैली हुई, अस्त-व्यस्त, विशेषण लगाये जा सकते हैं क्योंकि लोकगीत हो या लोकगाथा, लोककथा हो या लोक नाट्य अथवा लोक कलाएँ, यह सभी अंचल विशेष में बिखरी हुई होती हैं, साथ ही एक अंचल से दूसरे अंचल तक पहुँचने में इनमें अनेक नई-पुरानी प्रवृत्तियाँ घुल मिल जाती हैं, जिससे एक अंचल विशेष की रचना होने के पश्चात् भी दूसरे अंचल द्वारा वही सम्मान प्राप्त करती हैं।

चूंकि मौखिक परम्परा में विद्यमान होने के कारण इनका स्थायी रूप सुरक्षित नहीं रह पाता, केवल मूल कथा स्थायी होने पर कलेवर बदल जाता है, इस कारण से संकलन में अनेक पाठ मिलते हैं, इन अस्त-व्यस्त पाठों से ‘मानक-पाठ’ के निर्माण की आवश्यकता होती है। चूंकि लोकगीत, लोकगाथा, लोककथा एवं लोकनाट्यों का अधिक प्रचलन होने से इनके अधिकांश पाठ संकलित हो गये हैं। अतः इनका स्वरूप निश्चित होने लगा है।

इसके विपरीत मनुष्य के दैनिक जीवन में अवसर विशेष या बात-बात पर अपने अनुभवों को तकियाकलाम की भाँति प्रयोग करने वाली अनेक उक्तियाँ समाज में प्रचलित हैं जिनका संकलन नहीं हो सका या संकलन में इनके कई रूप दिखाई पड़े या जो अभी भी अस्त-व्यस्त रूप के कारण मानक नहीं हो पाये हैं, उन्हें लोक साहित्य में फुटकल अथवा 'प्रकीर्ण साहित्य' कहा जाता है।

लोकोक्तियाँ, कहावतें, पहेलियाँ, सूक्तियाँ, चुटकुले, मंत्र आदि ऐसी विधाएँ हैं जोकि अभी भी जन मानस में बिखरी हैं। इन्हें ही **प्रकीर्ण लोक साहित्य** कहा जाता है।

लोकोक्ति

१. **लोकोक्ति का अर्थ है–** लोक में प्रचलित **वह कथन अथवा उक्ति जो व्यापक लोक–अनुभव पर आधारित हो।**

२. लोकोक्ति को अंग्रेजी में **Proverb** कहते हैं।

३. लोकोक्तियाँ वस्तुतः जीवन की नीतिगत आचार संहिता है।

४. यह लोक मानस के दीर्घ अनुभवों का **संचित कोष** है जिसमें **इतिहास, परंपरा और संस्कृति** निरन्तर कुछ न कुछ जोड़ती रहती है।

५. लोकोक्ति को शास्त्रीय दृष्टिकोण से **गौण अर्थालंकार** माना गया है– ‘‘लोक प्रवादानुकृति लोकोक्तिरिति भण्यतें अर्थात् लोक विख्यात् किसी कहावत के अनुकरण से लोकोक्ति अलंकार होता है।’’

६. विद्वानों ने **वेदों में प्राप्त आधे–अधूरे ऋक** को लोकोक्ति साहित्य की बीजभूमि माना जाता है।

प्रमुख परिभाषाएँ

(क) **डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल-** "लोकोक्ति मानवीय ज्ञान के चोखे और चुभते हुए सूत्र हैं। अनन्तकाल से धातुओं को तपाकर सूर्य नाना प्रकार के रत्नों, उपरत्नों का निर्माण करता है, जिसका आलोक सदा छिटकता रहता है, उसी प्रकार लोकोक्तियाँ मानवीय ज्ञान के घनीभूत रत्न है, जिनमें बुद्धि और अनुभव की किरणों से फूटने वाली ज्योति प्राप्त होती है।"

(ख) **डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय-** "लोकोक्तियाँ अनुसिद्ध ज्ञान की निधि है। मानव ने युग-युग से जिन तथ्यों का साक्षात्कार किया है, उनका प्रकाशन इनके माध्यम से होता है। ये चिरकालीन अनुभूत ज्ञानराशि का प्रकाशन इनका प्रधान उद्देश्य है।"

(ग) **कुन्दनलाल उप्रेती-** "लोकोक्तियाँ लोकमानस की ऐसी संक्षिप्त विदग्ध तथा लोकप्रिय उक्तियाँ हैं जिनमें मानव ज्ञान तथा अनुभव अपने सहज तथा घनीभूत रूप में विद्यमान रहता है। ये लोकजीवन के सप्राणता और जिंदादिली के उदाहरण हैं।"

उदाहरण– **(i)** उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे ।

(ii) ऊँची दुकान, फीका पकवान ।

(iii) कंगाली में आटा गीला ।

(iv) घर का भेदी लंका ढाए ।

(v) घर की मुर्गी दाल बराबर ।

कहावतें

१. **‘कहावत’ को फारसी में ‘मसल’** और **अंग्रेजी में ’SAYING’** कहा जाता है।

२. अधिकांश परिभाषाओं में लोकोक्ति और कहावत, एक ही श्रेणी में परिभाषित की गयी हैं।

३. कहावत का सामान्य अर्थ है- **कहन-सुनन या कथा कहन** ।

४. कहावतों में भी लोकोक्ति की भांति लोक जीवन का सार एवं लोक मानस का अनुभव विद्यमान रहता है।

५. **लघुता, अनुभव-अर्क, भाषिक सरलता, सहजता, लोकप्रियता, व्यंज्ञात्मकता** आदि **कहावत के गुण** हैं।

६. भारतीय ग्रामीण समाज में प्रचलित **घर-परिवार, समाज, कृषि, पशुधन, वर्षा, शकुन-अपशकुन** आदि के बारे में लिखी गई कहावतें आज भी प्रचलित हैं ।

७. **कृषि, वर्षा, ऋतु सम्बन्धी** कहावतों में घाघ और भड्डरी की कहावतें विज्ञान को भी चुनौती देती हैं।

कहावत और लोकोक्ति में सामान्य अंतर

१. कहावत किसी भी व्यक्ति द्वारा कही जाती है जबकि लोकोक्ति कई लोगों के विचारोपरान्त किसी विद्वान विशेष द्वारा कही जाती है। यह बात और है कि विद्वान विशेष की पहचान जन प्रचलन के कारण लुप्त हो जाती है।

२. लोकोक्ति सीधे-साधे सरल शब्दों के साथ विलक्षणता का भाव भी रखती है जबकि कहावतें मुख्यतः विलक्षणता लिये हुये होती है।

३. कहावत का आधार दृष्टांत, घटना या परिस्थिति होती है जबकि लोकोक्ति में नीति अधिक प्रभावी होती है।

मुहावरा

१. अरबी भाषा के शब्द **'हौर'** शब्द से उत्पन्न **'मुहावरा'** परस्पर वार्तालाप के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

२. अंग्रेजी में इसे **इडियम (IDIOM)** कहते हैं ।

३. **'वाग्धारा'** शब्द भी मुहावरे के लिए प्रयुक्त होता है। **हिन्दी में एक समानार्थी शब्द 'रूढ़ि'** भी मिलता है।

४. मुहावरा अपने आप में ऐसा अर्थपूर्ण वाक्यांश है जो अपूर्ण होते हुए भी, भाषा-शैली को नई-शक्ति ऊर्जा देकर, अभिव्यक्ति विशेष को जीवन्त एवं सजीव बना देता है।

मुहावरे की विशेषताएँ

(क) सटीक शब्दावली–

मुहावरा अपने मूल रूप में किसी प्रकार का परिवर्तन, संशोधन, परिशोधन बर्दाश्त नहीं करता वह अपने पूर्ववत् रूप में रहकर ही मौलिक अर्थ व्यंजनाओं का व्यापक बनाता है।

(ख) लघु आकार और संक्षिप्तता–

बिहारी के दोहों की भांति समाहार शक्ति से ओत-प्रोत होते हैं।

(ग) वाक्य संरचना में प्रयोगाधीन–

'बंधन' ही मुहावरे की निजता है अर्थात् मुहावरा वाक्य संरचना का हिस्सा बनकर ही प्रभावशाली होता है। उसकी सार्थकता वाक्य के साथ एक रस होने से ही है। जैसे- 'नौ दो ग्यारह होना' मुहावरे की स्वतंत्र सत्ता होते हुए भी, बिना वाक्य में बंधकर उसकी व्यापकता, विलक्षणता और मारक क्षमता प्रकट नहीं होती। यथा- 'चोर लूट का माल लेकर नौ दो ग्यारह हो गये।" इसीलिए मुहावरा प्रयोगाधीन है।

(घ) व्यंजनात्मक एवं लक्षणात्मक–

व्यंजना और लक्षणा मुहावरे की अर्थसिद्धी है। जैसे– 'गाल फुलाना'– का सामान्य आंगिक चेष्टा है, किन्तु व्यंजना में इसका अर्थ निकलेगा– 'नाराजगी से गाल फुलाना' और लक्ष्यार्थ होगा– नाराज होना, अप्रसन्न होना।

(ङ.) शब्द–सृष्टि में मुहावरा विकास एवं बदलाव पसन्द नहीं करता। जैसे– **'गड़े मुर्दे उखाड़ना'** में हम **'मुर्दे'** के सीान पर **'लाश'** या **'शव'** रखें तो अर्थ–प्रतीति प्रभावित होगी। अतः मुहावरे की शब्द–सृष्टि अविकारी होती है।

मुहावरा एवं लोकोक्ति–कहावत में अंतर

1. लोकोक्ति-कहावतें पूर्ण वाक्य होती हैं, मुहावरा- वाक्यांश।
2. लोकोक्ति-कहावतें पूर्ण इकाई होने के कारण परिवर्तनशील नहीं होती जबकि मुहावरा वाक्य के अनुसार रूप बदलता है।
3. लोकोक्ति-कहावत निजता में पूरी तरह स्वायत्त और स्वतंत्र है किन्तु मुहावरे का निजता होते हुए भी कोई स्वतंत्र अर्थ नहीं है। यह प्रयोगाधीन है।
4. लोकोक्ति और कहावत अपने आप में दृष्टांत है किन्तु मुहावरा नहीं।
5. लोकोक्ति और कहावत गद्य और पद्य दोनों का मिश्रण होती हैं किन्तु मुहावरा केवल गद्य का।
6. लोकोक्ति और कहावत का कथ्य संक्षिप्त होता है जबकि मुहावरे का आकार

प्रहेलिका

- ‘प्रहेलिका’ को लोक में **‘पहेली’** कहा जाता है। अंग्रेजी में **‘रिडिल’।**

  लोक में इसे **‘बुझौवल’** भी कहते हैं।

- **विदग्ध मुख मण्डल ग्रंथ के अनुसार–**

  व्यक्ति कृत्य कमष्यर्थ, स्वरूपथिस्य गोपनात्।
  यत्र बाह्यान्तरावर्थो, कथ्यते सा प्रहेलिका।।

  अर्थात् किसी वस्तु के वास्तविक अर्थ के गोपन (छिपाने) के लिए जहाँ किसी अन्य अर्थ को प्रकट किया जाए, उसे प्रहेलिका कहते हैं।

- **आचार्य केशव के अनुसार–**

  बारनिय वस्तु दुराय जऊँ, कौनहुँ एक प्रकार।
  तासौं कहत प्रहेलिका, कुल बुद्धि उदार।।

- **डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय के अनुसार-**

“मानव प्रवृत्ति रहस्यात्मक है। मनुष्य जब यह चाहता है कि उसके कथन को सर्वसाधारण लोग न समझ सकें तब वह ऐसी भाषा का प्रयोग करता है जो जन सामान्य के लिए बोधगम्य नहीं होती। वही पहेली का रूप धारण कर लेती है।”

- **डॉ० सरोजनी रोहतगी के अनुसार-**

“पहेली एक विशेष कला है, जिसके द्वारा हमारी बौद्धिकता का स्वरूप निखरता है और उसमें एक प्रकार की तीव्रता आती है। वह एक सोद्देश्य रचना है। उसका सम्बन्ध बुद्धि की समाहार शक्ति से है। पहेली द्वारा बालकों में कौतूहल और मनोरंजन के भाव की सृष्टि होती है तथा युवकों और वृद्धों की जिज्ञासा का शमन होता है। इस प्रकार पहेली का उद्देश्य उसमें ही अन्तर्निहित रहता है। पृथक से उसके उद्देश्य की व्यंजना नहीं होती है। काव्य में उक्ति-वैचित्रय का जितना स्थान है, उतना ही लोक साहित्य में पहेलियों का।”

उपर्युक्त आधार पर प्रहेलिका की निम्नलिखित विशेषताएं सामने आती हैं।

1. **पहेली का मुख्य उद्देश्य-** बुद्धि परीक्षण के साथ-साथ कौतूहल वर्द्धन करना है।
2. पहेली जहाँ रीति-नीति का अंग होती है वहीं आनन्द और मनोरंजन का माध्यम भी।
3. पहेली बौद्धिक विकास के साथ-साथ मन को एकाग्रचित करने का कार्य भी करती है।
4. रहस्यात्मकता इसका विशेष गुण है।
5. मानव की भावाभिव्यक्ति की गोपनीय प्रवृत्ति ही पहेलियों की उत्पत्ति के मूल में है।

प्रहेलिका साहित्य के सूत्र

1. वेदों में प्रहेलिका के लिए **'ब्रह्योदय'** शब्द का प्रयोग होता है।
2. महाभारत में सर्प-युधिष्ठिर और यक्ष-युधिष्ठिर संवाद को पहेली का आदिम रूप मान सकते हैं।
3. संस्कृत साहित्य में प्रहेलिकाओं के **'सुभाषित रत्न भाण्डागारम्'** में संग्रहित किया गया है।
4. हिन्दी साहित्य में सिद्धों-तांत्रिकों और नाथ योगियों की **'संध्या भाषा'** और **'कबीर की उलटबासियाँ'** इनके प्रतिरूप में देखी जा सकती हैं।
5. **'अमीर खुसरो की पहेलियाँ'** लोक प्रचलित पहेलियों के स्वभाव, भाषा एवं गुण के अधिक निकट हैं।

सूक्ति

- सूक्ति शब्द **‘उक्ति’** में **‘सु’** जुड़कर निर्मित हुआ है। जिसका अर्थ है- **रमणीय सरस कथन, जो वाणी का रस रूप हो।**
- संस्कृत में इसे **सुभाषित** कहा जाता है।

“सुभाषितेन, गीतेन युवतीनाच लीलया ।
मनो न रमते, यस्य सः योगी अथवा पशुः ।।

अर्थात् सुभाषित गीत में और युवतियों की क्रीड़ा में जिसका मन नहीं रमता, वह या तो योगी होगा, या फिर पशु। अर्थात् सुन्दर ढंग से कही गई उक्ति ही सूक्ति है।

- **‘हिन्दी साहित्य कोश (भाग-१) के अनुसार-**

  “सूक्तिकाव्यकार का लक्ष्य पाठक का मनोरंजन करना नहीं बल्कि उसमें इहलौकिक और पारलौकिक जीवन का परिमार्जन और परिशोधन करना होता है।”

- विद्वानों का मानना है कि **‘सूक्ति’** और **‘लोकोक्ति’** में विशेष अंतर नहीं होता। दोनों का आत्म तत्त्व **‘नीति दर्शन’** है। एक सूक्ष्म अंतर यह है कि **‘सूक्ति’** में नैतिकता का जितना प्रबल आग्रह होता है उतना **‘लोकोक्ति’** में नहीं।

धन्यवाद